भारतीय कृषि एवं वानिकी क्षेत्र में बाँस की खेती को लेकर बढ़ते रुझान को ध्यान में रखते हुए भा.वा.अ.शि.प.–पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, उत्तर प्रदेश द्वारा पोषित परियोजना के अन्तर्गत बाँस संवर्धन एवं प्रबन्धन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बांकेगंज में यदुनन्दन सिंह पुजारी के पुजारी फार्म पर सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में प्रतिभागी किसानों को बाँस की खेती, उत्पादन, प्रबन्धन और बाजार की सम्भावनाओं से सम्बन्धित विस्तृत तकनीकी जानकारी प्रदान की गयी। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने अपने सम्बोधन में बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बाँस की खेती को बढ़ावा देने के लिए व्यापक योजनाएं बनायी जा रही हैं, जिससे किसानों को बाँस उत्पादन, बिक्री और मूल्य संवर्धन में सीधा लाभ मिल सके। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने बाँस के रख–रखाव, इसके आर्थिक महत्व और समावेशी खेती की सम्भावनाओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होने किसानों को बाँस आधारित कृषि मॉडल, लागत एवं लाभ विश्लेषण तथा आधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों पर भी जानकारी दी। कार्यक्रम में 50 से अधिक किसानों ने भाग लिया। किसान–वैज्ञानिक संवाद के माध्यम से प्रतिभागियों ने बाँस की व्यावसायिक खेती के तकनीकी पहलुओं, चुनौतियों और उनके प्रभावी समाधान के बारे में जानकारी प्राप्त की। किसानों को बाँस की खेती के समग्र दृष्टिकोण यथा पौध तैयार करना, पौध संरक्षण, जल प्रबन्धन, लम्बी अवधि के आर्थिक लाभ और बाजार उपलब्धता के बारे में भी विस्तार से अवगत कराया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम
क्षेत्र के प्रमुख किसान नेता की सहभागिता

किसान यूनियन के अध्यक्ष अमनदीप सिंह सन्धू, वेरिन्दपाल सिंह, धीरेन्द्र मौर्य, सोहन सिंह, सुबोध कुमार, यशपाल सिंह शर्मा, ठाकुर नौबत सिंह आदि ने भी सहभागिता की। इन सभी ने बाँस को आय के नए स्रोत के रूप में अपनाने पर सकारात्मक चर्चा की। कार्यक्रम का उद्देश्य उत्तर प्रदेश में बाँस की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देना, किसानों को आधुनिक तकनीकी ज्ञान उपलब्ध कराना तथा ग्रामीण स्तर पर हरित रोजगार को प्रोत्साहित करना रहा।

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, उ.प्र., लखनऊ
द्वारा वित्तपोषित परियोजना के अंतर्गत
प्रशिक्षण कार्यक्रम
बाँस संवर्धन व प्रबंधन
2025 । लखीमपुर खीरी

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, उ.प्र., लखनऊ
द्वारा वित्तपोषित परियोजना के अंतर्गत
प्रशिक्षण कार्यक्रम
2025 । लखीमपुर खीरी

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, उ.प्र., लखनऊ
द्वारा वित्तपोषित परियोजना के अंतर्गत
प्रशिक्षण कार्यक्रम
2025 । लखीमपुर खीरी

विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद्, उ.प्र., लखनऊ
द्वारा वित्तपोषित परियोजना के अंतर्गत
प्रशिक्षण कार्यक्रम
बाँस संवर्धन व प्रबंधन
8 दिसम्बर 2025 । लखीमपुर खीरी

राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक
समृद्धि न्यूज
समृद्ध समाज का आधार
वर्ष-13 अंक-99
लखनऊ, मंगलवार 09 दिसंबर 2025
पृष्ठ-12 मूल्य-₹ 3.00
लखनऊ से प्रकाशित
samradhinewslko@gmail.com, www.samriddhisamachar.com, info@samriddhinews.com

किसी भी व्यक्ति को नियुक्त करने से पहले करें पहचान : सीएम योगी 03
एसडीएम व खनन अधिकारी ने तीन ट्रकों को अवैध रूप से पकड़ा 10

बांस की खेती से खुलेगा किसानों की आमदनी का नया रास्ता

▸ बांकेगंज में बांस की व्यावसायिक खेती पर विशेष प्रशिक्षण, किसानों ने सीखी आधुनिक तकनीक

गोला गोकर्णनाथ, (लखीमपुर), समृद्धि न्यूज।

बांस की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देने के उद्देश्य से भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, उत्तर प्रदेश प्रायोजित परियोजना के तहत एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह प्रशिक्षण बांकेगंज क्षेत्र के श्री यदुनंदन सिंह पुजारी के पुजारी फार्म पर संपन्न हुआ, जिसमें बड़ी संख्या में किसान शामिल हुए।कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने किसानों को बांस के पौधों की रोपाई, संवर्धन, प्रबंधन, पौध संरक्षण और बाजार संभावनाओं से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विस्तृत तकनीकी जानकारी प्रदान की।

मुख्य अतिथि एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने बताया कि सरकार बांस आधारित खेती को प्रोत्साहन देने के लिए कई नई योजनाएँ लागू कर रही है, जिससे किसान उत्पादन से लेकर मूल्य संवर्धन तक सीधा लाभ उठा सकें।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव ने बांस की आर्थिक संभावनाओं, इसके रख-रखाव, लागत-लाभ विश्लेषण और आधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने कहा कि बांस न केवल तेजी से बढ़ने वाली फसल है, बल्कि किसानों के लिए लंबे समय तक नियमित आय का विश्वसनीय स्रोत भी बन सकती है। प्रशिक्षण में 50 से अधिक किसानों ने भाग लिया और किसान वैज्ञानिक संवाद के दौरान बांस की व्यावसायिक खेती से जुड़ी चुनौतियों व उनके समाधान पर चर्चा की। किसानों को बांस आधारित कृषि मॉडल, जल प्रबंधन, पौध तैयार करने की विधि और बाजार उपलब्धता की जानकारी भी दी गई।

कार्यक्रम में क्षेत्र के प्रमुख किसान नेता अमनदीप सिंह संधू, वेरिंदपाल सिंह, धीरेंद्र मौर्य, सोहन सिंह, सुबोध कुमार, यशपाल सिंह शर्मा, ठाकुर नौबत सिंह सहित कई किसान मौजूद रहे। सभी ने बांस को आय के नए और स्थायी स्रोत के रूप में अपनाने पर सहमति जताई। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य किसानों को आधुनिक तकनीक से परिचित कराकर प्रदेश में बांस की व्यावसायिक खेती को नई दिशा देना और ग्रामीण क्षेत्र में हरित रोजगार को बढ़ावा देना रहा।

बांस की व्यावसायिक खेती के दिए मंत्र

बांकेगंज। भारतीय कृषि एवं वानिकी क्षेत्र में बांस की खेती के प्रति बढ़ते रुझान को लेकर प्रगतिशील किसान यदुनंदन सिंह पुजारी के फार्म हाउस पर सोमवार को एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन हुआ। इसमें वैज्ञानिकों ने बांस संवर्धन एवं प्रबंधन के मंत्र बताए गए। कार्यक्रम में पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र प्रयागराज के डॉ. संजय सिंह ने बांस की खेती के बढ़ावा देने के लिए लिए प्रदेश सरकार की ओर चलाई जा रही विभिन्न योजनाओं की जानकारी दी गई। साथ ही इसके उत्पादन, प्रबंधन और बाजार की संभावनाओं के बारे में बताया। वरिष्ठ वैज्ञानिक आलोक यादव ने बांस के रखरखाव, आर्थिक महत्व और समावेशी खेती की संभावनाओं की जानकारी दी गई। कार्यक्रम में किसान यूनियन के अध्यक्ष अमनदीप सिंह संधू, वीरेंद्र पाल सिंह, धीरेंद्र मौर्य, नौबत सिंह, सोहन सिंह, सुबोध कुमार यशपाल सिंह आदि शामिल हुए। संवाद

बांस संवर्धन पर प्रशिक्षण, किसानों को आधुनिक तकनीक से कराया गया अवगत

खबर दृष्टिकोण संवाददाता

बांकेगंज खीरी। बांस की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देने और किसानों को तकनीकी जानकारी प्रदान करने के उद्देश्य से बांकेगंज में एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। यह कार्यक्रम भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र, प्रयागराज द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, उत्तर प्रदेश की परियोजना के तहत संपन्न हुआ। कार्यक्रम में विशेषज्ञों ने बांस की खेती, उत्पादन, प्रबंधन और बाजार संभावनाओं से जुड़ी तकनीकों पर विस्तार से जानकारी दी। मुख्य अतिथि एवं केंद्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने कहा कि प्रदेश सरकार बांस की खेती को बढ़ावा देने के लिए विशेष योजनाओं पर काम कर रही है, जिससे किसानों को उत्पादन से लेकर मूल्य संवर्धन तक प्रत्यक्ष लाभ मिल सके। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव ने बांस के रखरखाव, आर्थिक महत्व और समावेशी खेती मॉडल पर प्रकाश डाला। उन्होंने लागत-लाभ विश्लेषण, प्रसंस्करण तकनीक और बांस आधारित कृषि मॉडल की संभावनाओं को किसानों के सामने रखा। प्रशिक्षण में 50 से अधिक किसानों ने हिस्सा लिया। किसान-वैज्ञानिक संवाद सत्र के दौरान प्रतिभागियों को पौध तैयार करने, पौध संरक्षण, जल प्रबंधन, बाजार उपलब्धता, दीर्घकालिक आर्थिक लाभ और चुनौतियों के समाधान जैसे

विषयों पर विस्तृत जानकारी प्राप्त हुई। ग्रामीण क्षेत्र के कई प्रमुख किसान नेताओं–अमनदीप सिंह संधू, वेरिदपाल सिंह, धीरेंद्र मौर्य, सोहन सिंह, सुबोध कुमार, यसपाल सिंह शर्मा और ठाकुर नौबत सिंह–ने भी कार्यक्रम में सहभागिता की और बांस को आय के नए स्रोत के रूप अपनाने पर चर्चा की। कार्यक्रम उद्देश्य क्षेत्र में बांस की व्यावसायि खेती को बढ़ावा देना, किसानो आधुनिक तकनीकी ज्ञान से सश करना और ग्रामीण स्तर पर ह रोजगार को बढ़ावा देना रहा।

दैनिक निर्वाण टाइम्स | पंकज शुक्ला | लखीमपुर-खीरी

बांस की व्यावसायिक खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

निर्वाण टाइम्स ब्यूरो

गोला गोकर्णनाथ खीरी। भारतीय कृषि एवं वानिकी क्षेत्र में बांस की खेती को लेकर बढ़ते रुझान को ध्यान में रखते हुए भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, उत्तर प्रदेश द्वारा पोषित परियोजना के अंतर्गत बांस संवर्धन एवं प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बांकेगंज में यदुनंदन सिंह पुजारी जी के पुजारी फ़ार्म पर सम्पन्न हुआ।

कार्यक्रम में प्रतिभागी किसानों को

बांस की खेती, उत्पादन, प्रबंधन और बाजार की संभावनाओं से संबंधित विस्तृत तकनीकी जानकारी प्रदान की गई। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने अपने संबोधन में बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बांस की खेती को बढ़ावा देने के लिए व्यापक योजनाएँ चलाई जा रही हैं, जिससे किसानों को बांस उत्पादन, बिक्री और मूल्य संवर्धन में सीधा लाभ मिल सके। वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव ने बांस के रख-रखाव, इसके आर्थिक महत्व और समावेशी खेती की संभावनाओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों को बांस आधारित कृषि मॉडल, लागत एवं लाभ विश्लेषण तथा आधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों पर भी जानकारी दी। कार्यक्रम में 50 से अधिक किसानों ने भाग लिया। किसान-वैज्ञानिक संवाद के माध्यम से प्रतिभागियों ने बांस की व्यावसायिक खेती के तकनीकी पहलुओं, चुनौतियों और उनके प्रभावी समाधान के बारे में जानकारी प्राप्त की। किसानों को बांस की खेती के समग्र दृष्टिकोण–जैसे पौध तैयार करना, पौध संरक्षण, जल प्रबंधन, लंबी अवधि के आर्थिक लाभ और बाजार उपलब्धता–के बारे में भी विस्तार से अवगत कराया गया।

प्रशिक्षण कार्यक्रम में क्षेत्र के प्रमुख किसान नेता–

किसान यूनियन के अध्यक्ष अमनदीप सिंह संधू, वेरिंदपाल सिंह, धीरेंद्र मौर्य, सोहन सिंह, सुबोध कुमार, यसपाल सिंह शर्मा, ठाकुर नौबत सिंह आदि–ने भी सहभागिता की। इन सभी ने बांस को आय के नए स्रोत के रूप में अपनाने पर सकारात्मक चर्चा की।

कार्यक्रम का उद्देश्य उत्तर प्रदेश में बांस की व्यावसायिक खेती को बढ़ावा देना, किसानों को आधुनिक तकनीकी ज्ञान उपलब्ध कराना तथा ग्रामीण स्तर पर हरित रोजगार को प्रोत्साहित करना रहा।

बांस की व्यावसायिक खेती पर प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन

अमर भारती ब्यूरो

गोला गोकर्णनाथ खीरी। भारतीय कृषि एवं वानिकी क्षेत्र में बांस की खेती को लेकर बढ़ते रुझान को ध्यान में रखते हुए भा.वा.अ.शि.प.-पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केन्द्र, प्रयागराज द्वारा विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद, उत्तर प्रदेश द्वारा पोषित परियोजना के अंतर्गत बांस संवर्धन एवं प्रबंधन विषय पर एक दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। यह कार्यक्रम बांकेगंज में यदुनंदन सिंह पुजारी जी के पुजारी फ़ार्म पर सम्पन्न हुआ।कार्यक्रम में प्रतिभागी किसानों को बांस की खेती, उत्पादन, प्रबंधन और बाजार की संभावनाओं से संबंधित विस्तृत तकनीकी जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि एवं केन्द्र प्रमुख डॉ. संजय सिंह ने अपने संबोधन में बताया कि उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा बांस की खेती को बढ़ावा देने के लिए व्यापक योजनाएँ बनाई जा रही हैं, जिससे किसानों को बांस उत्पादन, बिक्री और मूल्य संवर्धन में सीधा लाभ मिल सके।

वरिष्ठ वैज्ञानिक डॉ. आलोक यादव ने बांस के रख-रखाव, इसके आर्थिक महत्व और समावेशी खेती की संभावनाओं पर विस्तृत प्रकाश डाला। उन्होंने किसानों को बांस आधारित कृषि मॉडल, लागत एवं लाभ विश्लेषण तथा आधुनिक प्रसंस्करण तकनीकों पर भी जानकारी दी।

दिलाया गया

किसानों को दी बांस की खेती से लाभ की जानकारी

संसू, जागरण ● बांकेगंज (लखीमपुर): प्रयागराज के पारिस्थितिक पुनर्स्थापन केंद्र की ओर से सोमवार को यदुनंदन सिंह पुजारी के फ़ार्म पर जागरूकता गोष्ठी हुई। इसमें किसानों को बांस की बढ़ती मांग के साथ कृषि व आर्थिक महत्व के बारे में जानकारी दी गई। विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी परिषद उत्तर प्रदेश से पोषित परियोजना के तहत बांस संवर्धन व प्रबंधन को लेकर किसानों को बांस की खेती की आधुनिक तकनीक, रखरखाव, उत्पादन, प्रबंधन और बाजार की संभावनाओं से लेकर आर्थिक लाभ के बारे में विस्तार से जानकारी दी गई।

गोष्ठी के दौरान बांस की खेती की जानकारी देते वैज्ञानिक ● जागरण

मुख्य अतिथि डा. संजय सिंह ने कहा कि राज्य सरकार बांस की खेती से किसानों को उत्पादन से लेकर मूल्य संवर्धन तक सीधा आर्थिक लाभ मिल सकेगा। वैज्ञानिक डा. आलोक यादव अमनदीप सिंह संधू, वीरेंद्र पाल सिंह, धीरेंद्र मौर्य, सोहन सिंह, सुबोध कुमार, यशपाल सिंह मौजूद रहे।

का किया उद्घाटन